सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिमार्ग - ग्यारह

" जय श्री कृष्ण "

मोरा बचपन

मोरा लडकपन

मोरा भोलापन

मोरा नादान

मोरा यौवन

मोरा जोबन

मोरा मनन

मोरा लगन

मोरा पठन

मोरा मिलन

मोरा गगन

मोरा चमन

मोरा दर्शन

मोरा वर्तन

मोरा दर्पन

मोरा सोहन

मोरा करन

मोरा धरन

मोरा चरन

मोरा भरन.

मोरा सहन

मोरा जगन

मैं ही जानु - मैं ही धानु - मैं ही भानु - मैं ही ज्ञानु

मैं ही थानु - मैं ही थामु - मैं ही गानु - मैं ही पानु

मैं ही तरंगु - मैं ही बरसु - मैं ही तरसु - मैं ही तडपु

मैं ही - मैं ही - मैं ही और मैं ही 🌷🙏🌷

हे प्रिये! समझझा - समझझा 🌷🙏🌷

कान्हा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीवन जिते जिते सत्व रज और तामस गुणों से कहीं प्रकार के स्पर्श होता है।

हम सत्व गुणी होंगे तो हमें अधिक यही प्रकार के गुणी स्पर्शेगें

हम रजो गुणी होंगे तो हमें अधिक यही प्रकार के गुणी स्पर्शेगें

हम तामसी गुणी होंगे तो हमें अधिक यही तामसी प्रकार के गुणी स्पर्शेगें

हाँ! यह भी अवश्य है कि हमें कभी कभी योग्य प्रकार के गुणी भी स्पर्शेगें और हमें संकेत, सूचन और निर्देश करेंगे - जाग जा!

प्राथमिक नियमन और सिद्धांत वैदिक हमें सत्व गुणी का संकेत, सूचन और निर्देश अधिक से अधिक मिलते है - क्यूंकि हम न्यायिक हो - हम धार्मिक हो - हम शुद्धि हो - हम योग्य हो 🌷🙏🌷

हम पर अधिक बार कृपा, अनुग्रह और आशीर्वाद रहते है।

यही प्रमाणित करते है हम अंशी है, हम मायिक है, हम गुणी है, हम ज्ञानी है🙏

जगत के कोई भी जीव ऐसा तरास लो जो अज्ञानी है - कोई नही मिलेगा 🌷🙏🌷

हर एक...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे प्यार के पाने को

मनमें ऐसा संकल्प जगाया

नैनों में ऐसा साया बसाया

सांसों में ऐसी उर्मि स्पंदाई

धडकन में ऐसी गूंज उठाई

तन में ऐसा रंग खिलाया

दिल में ऐसा प्रेम प्रकटाया

तु ही तु राधा

तु ही तु कान्हा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मनुष्य जन्म अनमोल है

मनुष्य जन्म अलौकिक है

मनुष्य जन्म धार्मिक है

मनुष्य जन्म सैद्धांतिक है

मनुष्य जन्म अद्वैतिक है

मनुष्य जन्म परमार्थी है

मनुष्य जन्म याज्ञिक है

मनुष्य जन्म वैदिक है

मनुष्य जन्म दूर्लभ है

मनुष्य जन्म परमहैतुक है

मनुष्य जन्म अक्तृम है

हे वल्लभ! आप निरुपम हो 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति इतनी परमोच्चित है 🌷🙏🌷

हमें सर्वथा इन्हें समझ कर स्वीकार कर अपनाना चाहिए 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छननन छन छननन छन

छम छम छमछमा छम

ठिंक ठिंक ठिंक ठिंक

सनननन सनननन

छुम छुम छुम छुम छुम

मेरी पैजनिया गाये छननन छन

मेरी पायलियाँ बाजे छमछमा छम

मेरी चुनरियाँ छमके छुम छुम छुम

मेरी कमरिया ठमके ठमठमा ठम

मेरी चुडियां खनके रणझुण रणझुण

मेरी कडलिया कडले डहक डहक

मेरी कुंडलियां लटके लटक लटक

मेरी पगलियां मटके मटक मटक

मेरी गगरिया गाजे गटुर गटुर

मेरी नजरिया नजरे नजर नजर

हे कान्हा! मेरे सांवरियाँ

तेरी प्रीत में नाचें तेरी गौरैयाँ

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नैनों में कजरा लगा कर

झुल्फों में गजरा बांध कर

सर में मांग भर कर

कपोल पर सुहाग सजा कर

कर्णो पर कुंडल लटक कर

नासिका पर नथनी पौर कर

अधर पर लाली रंगा कर

गले में व्यजयंति पहन कर

अंग पर चुनरी ओढ कर

कमर पर लचकिया गांठ कर

पग में पैजनियाँ थमक कर

मैं नाचूँ पिया के रंग

हे श्याम! खेलना प्रीत जोगनिया संग

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नव विलास रंग श्री यमुने महाराणी

गोप गोपि संग खेले प्रेम रास ठकुराणी

नव नव कानन शृंगार सजे रसराणी

व्रजरज सिंचे पुष्टिपीय भक्त प्रीत भगिनी

पंकजमाल धरे प्रियतम चतुर्थप्रियाराणी

कदम कदम भरे हरिप्रिया मुकुंदरतिवर्धिनी

एक एक विलास एक एक मिलन सुरधुनी

श्याम संग श्यामा रसे रसो वैस मधुराणी

हे यमुने! तु हे मेरी पुष्टि धात्री🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" गोपि "

" गोपाल "

" गोप "

क्या जानते है यह कक्षा का अर्थ🌷

क्या समझते है यह स्थिति का अर्थ🌷

हम जानते है केवल - जो व्रज स्थली में रहते है वह गोपि - गोप 🌷🙏🌷

हम समझते है केवल - जो जो श्री कृष्ण स्थली है जहां जहां जगत पर वहां वहां गोपि - गोप है 🌷🙏🌷

गोपि - जो प्रेम पीलाये वह गोपि

गोप - जो प्रेम लुटाये वह गोप

गहराई से सोचे - अति गहराई से सोचे 🙏

गोपि कौन? गोप कौन?

गोपि - जो अपनी इन्द्रियों से अमृत पीलाये वह गोपि 🌷

गोपि जो अपनी इन्द्रियोंको संस्कारों से सिंचन करके उत्कंठित करे वह गोपि 🌷

गोपि - जो अपने आपको सर्वथा से समर्पण करे वह गोपि 🌷

गोपि - केवल कृष्ण - सदा कृष्ण - अविचलित कृष्ण - अद्वैत कृष्ण 🌷

गोपि - अखंड कृष्ण - अतूट कृष्ण - अनोखा कृष्ण - आविर्भाव कृष्ण - आत्मा कृष्ण - अंत:करण कृष्ण 🌷

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण केवल कृष्ण

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कल आगे.......

श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे वल्लभ
ओ मेरी यमुना
ओ मेरे विठ्ठल
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे गोपाल
ओ मेरे गोविंद
ओ मेरे गोवर्धन
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे महाप्रभु
ओ मेरी कालिन्दी
ओ मेरे गौसाईजी
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे वैष्णव
ओ मेरी पुष्टि
ओ मेरे गिरिराज
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे सखा
ओ मेरी श्यामा

ओ मेरे गोपिजन
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे गिरिधर
ओ मेरे नवनीत
ओ मेरे मथुरेश
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे कान्हा
ओ मेरे श्याम
ओ मेरे घनश्याम
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे श्रीनाथजी
ओ मेरी स्वामीनी
ओ मेरे बालकृष्ण
श्री कृष्ण: शरणं मम
श्री कृष्ण: शरणं मम

ओ मेरे कल्याण
ओ ...
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति

हमारा संस्कार

हमारा संयुक्त कुटुंब

हमारा खिलौना

हमारा आहार

हमारा वेष

हमारा धर्म

हमारा उत्सव

हमारा शृंगार

हमारा शिक्षण

हमारी रमते

हमारी मित्रता

हमारे आडोश पाडोश

हमारा रहेठाण

हमारा समाज

हमारी रीतरसम

हमारी मर्यादा

हमारा पालन पोषण

हमारा निर्वाह

हमारा संबंध

सच में अदभुत

धैर्य से तपास करले - पूरा जगत

हमारा जैसा है कोई देश?

हम रहते है - हम जीते है इसलिए नही पर जो नही रहते है, जीते है उन्हीं से जानले - समझले

हम जो भी है पर सामाजिक है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर दयालु है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर मददगार है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर धार्मिक है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर प्रयत्नशील है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर हार्दिय है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर आज्ञाकारी है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर साथीदार है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर कृतज्ञ है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर अनुयायी है 🌷🙏🌷

हम जो भी है पर ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जन्म धरा तुम्हें बार बिनती कर
हे गोविंद! मुझे जन्म लेना है मनुष्य जीव हो कर
तेरी लीला सुनी
तेरी लीला छूई
तेरी लीला खेली
तेरी लीला समझी
तेरी लीला पहचानी
तेरी लीला अपनाई
तु अनोखा तेरी हर नटखटता निराली
तु अदभुत तेरी हर अदा विराली
तु अखंडित तेरी हर छटा हरिली
तु अलौकिक तेरी हर मुद्रा पहली
तु करुणानिधि तेरी हर घटना दुलारी
हे प्रभु! तेरा अवतार
हे प्रभु! तेरा आधार
हे प्रभु! तेरा प्रेम
मुझे तेरा होने का गर्व अनुभव करवाया
मुझे तुझसे प्रेम करने का पुरुषार्थ करवाया
मुझे तेरा अंश होने का धर्म सीखाया
मुझे तुझमें एकाकार होने का कर्म जताया
सच हे कृष्णा!🌷🙏🌷
नमन - वंदन - प्रणाम - समर्पण करें 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कृष्ण! यह कैसा विरह

तेरी यादों से तेरे निकट

पर

मेरी नजर से तु दूर

ऐसा कैसे हो सकता है?

जो यादों में हो वह तो मेरे साथ ही है

चाहे तु नजर में नही

पर नैनों में तो हो

अरे तु नजर में नही कहीं

पर है तु यही कहीं

तेरी महक कहती है

तु यही हो

तरे धडकन की गूंज धडक धडक कहती है तु यही हो

तेरा उच्छवास सिसक सिसक के कहता है

हाँ! मैं यहां ही हूं

अच्छा! तो कहो कहां हो?

तेरे नैनों में

तेरे इंतजार में

तेरी यादों में

तेरे विरह में

तेरे ख्यालों में

तेरी महक में

तेरी चहक में

तेरी बहक में

तेरे विरह में

हे कान्हा!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज "

" व्रज स्पंदन "

" व्रज रज "

" व्रज यात्रा "

" व्रज धाम "

" व्रज वास "

" व्रज वन "

" व्रज गोप "

" व्रज गोपि "

" व्रज लीला "

" व्रज यमुना "

" व्रज राजा "

" व्रज रानी "

" व्रज बिहारी "

" व्रज महाराजा "

" व्रज महाराणी "

" व्रज स्पर्श "

" व्रज प्रेम "

" व्रज रस "

" व्रज रास "

अनोखा व्रज - अखंड व्रज - अदभुत व्रज - अलौकिक व्रज

व्रज - व्रज - व्रज - व्रज - व्रज - व्रज - व्रज

व्रज का ख्याल

व्रज की याद

व्रज का स्मरण

व्रज का उमंग

व्रज का रंग

व्रज का संग

व्रज का अंग

सच! व्रज व्रज है🌷

हे व्रज! सदा सदा ही हममें बस 🌷🙏🌷

तु है तो प्रेम है

तु है तो विरह है

तु है तो मिलन है

तु है तो एकात्मता है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बंसी की धून राधे
पैजनिया कि रुमझुम राधे

अधर का रंग राधे
कर्ण के लचक कुंडल राधे

कपोल का तिलक राधे
अखंड सौभाग्य सिंदूर राधे

हस्त भूजा कंगन राधे
कर कमलों की चूडियां राधे

गल वैज्यंति माला राधे
बाहे बंध गले का हार राधे

लाल रंग चूंदड़ी राधे
केसरिया रंग खेस राधे

राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "

" प्रभु की लीला "

अति धैर्य और शांत तनमात्राएं और स्थितिप्रज्ञता से अध्ययन करते है तो यह व्याक्य अति गंभीर और विशुद्ध परिणाम पा सकती है या ला सकती है🌷🙏🌷

" प्रभु की लीला " व्याक्य साधारण और सामान्य नही है।

" प्रभु की लीला " व्याक्य परमोच्चित और परमोधर्मि और परमोअद्वैत और परमोविशुद्ध है।🌷🙏🌷

अति गहनता से यह व्याक्य को अपनी अंदर उत्स करेंगे तो अवश्य हमें कहीं विशेष योग्यता का आविर्भाव होगा जो ज्ञान और भाव अर्थात भक्ति की परमोत्तमता समझ आयेगी।🌷🙏🌷

" प्रभु की लीला " हे प्रभु! आप करुणानिधि - करुणामयी - करुणाकरण हो🌷🙏🌷

मुझे ऐसा भाष होता है - मैं

पर मैं में आप हो🌷🙏🌷

आप में मैं है🌷🙏🌷

" मैं " अपभ्रंश है आप ही आप हो🌷🙏🌷

आपको मेरी शरणागति🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ध्यान से संभलिए

सांस आपकी है?

आत्मा आपकी है?

परलोक आपका है?

प्रेम आपका है?

सूर्य आपका है?

धरती आपकी है?

सागर आपका है?

आकाश आपका है?

वायु आपका है?

रंग आपका है?

बादल आपका है?

बारिश आपकी है?

नक्षत्र आपके है?

ग्रह आपके है?

अक्षर आपके है?

ज्ञान आपका है?

भाव आपका है?

नही नही नही और नही

🙏🙏🙏🙏🙏🙏

आपका मन है

आपका तन है

आपका धन है

आपका जीवन है

आपका कर्म है

आपका पुरुषार्थ है

आपका फल है

आपका जन्म है

आपकी मृत्यु है

जो नाशवंत है

जो नाशवंत है वह हमारा

जो अमर है - अमृत है वह नही हमारा

सच! हम कैसे?

जो हमारा है इसलिए हमें इन्हें समझना है

संभलना है

सलामत रखना है

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" प्रभु ही सही और गलत का कर्ता है "

" प्रभु ही सबकुछ करवाता है "

" सब उपरवाला जाने - उसके हाथ में ही ऐसी लाठी है जो चाहे उन्हें ऐसे घुमाये "

" हम तो उनकी कठपुतली है "

कितनी बार - कहीं बार - बार बार - अनेकों के मुखसे यह सुना🙏

यह सुनते और सुनके जो गहराई में अपने आपको संवारा उन्होंने कहीं सुखद - परमोक्त - भक्तिदायक - आनंदायक अनुभूति पायी🌷🙏🌷

जिन्होंने यही व्याक्यो को अपना कर अपने में मस्त रहे उन्होंने साधारणता से अपने को समझाया - बस होने दो - चलने दो और अपने आपको सामान्यता से घट दिया🌷🙏🌷

यह हर व्याक्यो इतने मार्मिक - धार्मिक - आध्यात्मिक और सौहार्द भरे है कि हम अपने आप को सहिष्णु - विष्णु - दर्षणु और श्रीकृष्ण घड सकते है🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" तन "

त - तपस

त - तटस्थ

त - तृतीय

त - तर्ज

त - तरुण

त - तेज

त - तड़प

त - तत्व

त - तथ्य

त - ताप

त - ताल

त - तादृश्यता

त - तात्पर्य

त - तक

त - तजुर्बा

त - तर्पण

न - नमन

न - नम्रता

न - नव

न - नाम

न - नैया

न - न्याय

न - नाथ

न - नाद

न - नृसिंह

न - नंद

तन से ही ताद्दश्य हो सकते है

तन योग्य - मन योग्य - जीवन योग्य

तन से ही तपश्चर्या

तन से ही तृप्तता

तन पवित्र और शुद्ध - सदा भगवान भगवान भगवान

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सुहाना सुहागा मांग भरता सूरज

मन महकाता शृंगार सजाता प्रकृत रंग

अंग अंग बंधाया सारा तन औढाया

प्रिये के लिए भगवान ने रचाया

ऐसे समर्पू ऐसे सुश्रुषाऊँ ऐसे शरणाऊँ

जन्म जन्म का विरह मिटाये

आत्म आत्म मिलन से परमात्मा बनाये

प्रेम प्रीत की एक ही पराकाष्ठा

पति श्री प्रभु स्वरुप प्रक्टाये

यही वह दिन जो मेरी हर करनी अपनाये

संस्कार संस्कृति की सही करवाचौथ

मेरे प्रिये के मुखडे से संवाराये

मैं धरती मैं सृष्टि मैं संस्कृति मैं धर्मी

यही मेरे जन्मोजन्म की आराधना

यही मेरे सांसों की साधना

यही मेरी प्रेम की उपासना

करवाचौथ की यही सर्वोत्तम सभ्यता

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

स्त्री की पवित्रता - शुद्धता - विश्वास

स्त्री को वंदन - नमन और प्रणाम करने का दिन

" पति "

पत पत पथ पथ

पाथेय प्रेम प्रीतम

ई ई ई ई ई ई ई ई

हमारे संस्कृति के ऋषिमुनियों - हमारे वेद वेदांत के आचार्यो और आध्यात्मिक गुरुजीओं साथ साथ परम भगवदीय भक्तों से रचाई यह धरोहर सर्वोत्तम, सर्वोच्च और मानव जीवन के लिए सर्वोपरि है🌷🙏🌷

पति - प्राथमिकता से समझे

गणपति

विद्यापति

वाक्पति

गृहपति

पृथ्वीपति

मायापति

मधुपति

ऐसे कहीं गुणातीत पति जो जीव - जन्म - जीवन को सत्यात्मक ही घडते है🌷🙏🌷

पति - रक्षति जो सर्वथा से रक्षण करता है

पति वोही होता है - जो संस्कार - आध्यात्म - पवित्रता और सत्यता ही जगाता है🌷🙏🌷

करवाचौथ का माहात्मय यही " पति " आधारित है🌷🙏🌷

सभी धर्मपत्नीओं को अभिनंदन🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति की धरोहर हर को अखंडित रखते है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ! श्री प्रभु हमारे घर बिराजे है। 🌷🙏🌷

कितनी महान - अनोखी और आनंदमंय पूर्ति 🌷🙏🌷

पुष्टिमार्ग की यह अखंडमय निधि हमें कितना उत्कृष्ट और मधुरमय करता है🌷🙏🌷

श्री प्रभु हमारे घर पधारे🌷🙏🌷

श्री प्रभु हमारे घर बिराजे 🌷🙏🌷

अदभुत और अलौकिक सामर्थ्य की उपाधि का दर्शन है🌷🙏🌷

उद्वेग - संशय - असंतोष - कंकास - रंज - कपटता - आक्रोश - स्वार्थ - अवज्ञा - संताप - क्रोध - दुष्टता - अधर्म - अविवेक आदि का तो यहां स्थान ही नही है🌷🙏🌷

कितना मधुर जीवन - संसार - कुटुंब - समाज - वंश - धर्म 🌷🙏🌷

अदभुत! 🌷🙏🌷

एकांत में सोचना 🌷🙏🌷

हमारा जीवन ऐसा है?

हाँ! होना ही चाहिए - न हो तो आज से यह पल से - यह क्षण से -

मधुराधिपते करणं मधुरम् 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे जगत!

यह कमाया

वह कमाया

नाम कमाया

काम कमाया

धन कमाया

मिलकत कमाया

सौहरत कमाया

दौलत कमाया

रिश्ता कमाया

संबंध कमाया

समाज कमाया

प्रतिष्ठा कमाया

धंधा कमाया

सेवा कमाया

दान कमाया

विद्या कमाया

शिक्षा कमाया

संस्कार कमाया

इज़्ज़त कमाया

वफा कमाया

दोस्ती कमाया

शरम कमाया

धरम कमाया

प्रेम कमाया

सब कमाया

अब कहना श्री प्रभु मैं क्या नही कमाया?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आप यह प्रश्न का उत्तर दो 🌷🙏🌷

" लौकिक "

बार बार सुनते है - यह लौकिक है 🌷🙏🌷

पता नही कैसे कहते है लौकिक।

चारों ओर लौकिक

जहां देखो वहां लौकिक

लौकिक की नजरिया

लौकिक की गठरियाँ

लौकिक की कहानियां

लौकिक की जीवनियां

लौकिक कौन नही?

स्व आत्म निरिक्षण से समझे - लौकिक कौन नही?

कौन किसे लौकिक न समझे!

आपकी समझ से ऐसा लौकिक

हमारी समझ से ऐसा लौकिक

कहीं चरित्रों जो अलौकिक है उनसे समतल करें

जैसे

नरसिंह महेता

मीराबाई

प्रहलाद

तुकाराम

कुंभनदास

कोई अपने आप से लौकिक की व्याख्या करे पर लौकिकता छुट नही सकती 🌷🙏🌷

लौकिकता का अपरस कठिन अवश्य है पर द्रढ मनोबल ही इसे अलौकिक कर सकता है। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अपने विचार यह संदर्भ में रजूआत कर सकते है🌷🙏🌷

हे वल्लभ आये हमारे पास

सखा वल्लभ आये हमारे पास

श्री पुरुषोत्तम सहस्त्र नामस्त्रोत्रम्

रचाया दिन दिन भागवत स्मरणमम्

गाया श्री प्रभु लीला गान

हे वल्लभ आये हमारे पास

हे वल्लभ नाचे हमारे साथ

सखा वल्लभ नाचे हमारे साथ

श्री यमुनाजी ठकुराणी घाट पधारे

श्री यमुनाष्टक लीला जगावे

रचाया श्री यमुना प्राण

हे वल्लभ नाचे हमारे साथ

हे वल्लभ चले परिक्रमा मार्ग

सखा वल्लभ चले परिक्रमा मार्ग

श्री प्रभु विरह लीला ताप जगाये

ब्रह्मसंबंध का प्रण बंधाये

प्रकटाया पुष्टि मार्ग

हे वल्लभ चले परिक्रमा मार्ग

हे वल्लभ धरे दंडवत गोवर्धन

सखा वल्लभ धरे दंडवत गोवर्धन

अष्टसखा शरण कीर्तन गवाये

श्रीनाथजी स्वरुप अंग मिलाये

करवाया गृहसेवा ज्ञान

हे वल्लभ धरे दंडवत गोवर्धन

हे वल्लभ! आप को दंडवत प्रणाम🙏

आपका हर कदम हमें श्री प्रभुका सानिध्य अनुभवाते है🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे परमात्मा ! कितना भाग्यशाली हूं मैं

आपके अंश से आविष्कार हुआ मेरा

आपके आत्मा से पार्दुभाव हुआ मेरा

आपके मन से आविर्भाव हुआ मेरा

आपके धर्म से धरणीधर हुआ मे रा

आपसे क्रिडा करने

जो जो जन है जो जो जीव है

उनसे खेलें उनसे जी ले उनसे मिल ले

हे परमात्मा! कितना कृपालु हूं मैं

आपकी कृपा से सदा खुश रहता हूं मैं

आपकी दया से सदा प्रकृति पीता हूं मैं

आपकी करुणा से सदा क्षमा पाता हूं मैं

हे परमात्मा! हे विधाता! हे नियंता!

आपको सदा प्रणाम🙏

निकट हूं तेरे करीब हूं तेरे अंदर हूं तेरे एक हूं तेरे

तु ही रिश्ता तु ही संबंध तु ही स्नेही तु ही कुटुंबि

सदा तेरी शरण में पालना🙏

सदा तेरे आचरण में संवरना🙏

सदा तेरे चरण में रखना🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सत्संग मां जईये हे साथी सत्संग मां जईये
मनने मधुर करीऐ ओ साथी सत्संग मां जईये

हाथथी ताली मुखथी मधुरम्
श्री प्रभुनां गुणगान गाईऐ
साथी सत्संग मां जईऐ
सत्संग मां जईऐ हे साथी सत्संग मां जईऐ

नैनथी दर्शन आत्मथी ओलख
रज रजमां श्री प्रभु निहालीये
साथी सत्संग मां जईऐ
सत्संग मां जईये हे साथी सत्संग मां जईऐ

सहुने नमन जय श्री कृष्ण
हर एकने श्री राम श्री राम
साथी सत्संग मां जईऐ
सत्संग मां जईऐ हे साथी सत्संग मां जईऐ

जय रणछोड माखण चोर
गोविंद गोपाल नंद किशोर

जय रणछोड चितडुं चोर
मुंकुंद माधव श्याम सुंदर
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वंदन श्री यमुना
वंदन श्री वल्लभ
वंदन श्री गोवर्धन
वंदन श्री श्रीनाथजी
तम शरण यह जीव है
तम स्मरण यह जीव है
तम वरण यह जीव है
तम ग्रहण यह जीव है
कैसे दु:खी हो सकता है
कैसे तृष्टि हो सकता है
कैसे भ्रष्टि हो सकता है
कैसे दुष्टि हो सकता है
तुम्हारा अंश
तुम्हारा नाम
तुम्हारा धर्म
तुम्हारा वर्ण
भटक भटक कर कितना भटके
अटक अटक कर कितना अटके
लटक लटक कर कितना लटके
मटक मटक कर कितना मटके
तुम्हारी मैं करुणा
तुम्हारी मैं धरणा
तुम्हारी मैं झरणा
तुम्हारी मैं रक्षणा
हे प्रभु! वंदन वंदन वंदन
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री कृष्ण कृष्ण

श्री कृष्ण कृष्ण

श्री कृष्ण: शरणं मम।

हमारा धर्म - संस्कृति - संस्कार और कर्माणिनिधान श्री कृष्ण हमारे भगवान है हमारे प्रिये है

हमारे प्रियतम है

हमारे सर्वज्ञ है

हमारे सर्वदा है

हमारे सर्वथा है

हमारे सर्वस्व है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हमारे हृदयस्थ है

हमारे प्राणस्थ है

हमारे मनस्थ है

हमारे ज्ञानस्थ है

हमारे भावस्थ है

हमारे ध्यानस्थ है

हमारे प्रेमोस्पद है

हमारे बचपन से लेकर हमारे परलोकस्थ लेकर - कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण🙏

अखंड कृष्ण

अनोखे कृष्ण

अदभुत कृष्ण

अलौकिक कृष्ण

आनंदित कृष्ण

परमानंद कृष्ण

मधुर - मधुरम् - मधुरता - माधुर्य - मधुपति

हे कृष्ण! सदा हममें है🌹

तो

हे कृष्ण! सदा हममें रहो🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

" दीपावली - दीवाली "

अपने मन से मान लिया उसे ही हम सत्य मानते है

अपने मन ने जो अपना लिया उसे ही हम सत्य मानते है

अपने मन ने स्वीकार लिया उसे ही हम सत्य मानते है

अर्थात मन और मानना

मन का सही ही अर्थ है - मानना

एक सज्ञा अवश्य जोड दो और वह सज्ञा है - सिद्धांत

सिद्धांत को जोडने से यह मानना में विश्वास जागेगा

सिद्धांत को जोडने से यह मानना में सत्यता जागेगी

विश्वास और सत्यता जाग गई

हमारा मन शुद्ध, पवित्र और योग्य हो गया

" दीपावली - दीवाली " यही ही संकेत, संदेश, संकल्प का प्रतीक है🌹🙏🌹

दीप प्रज्वलित किया

तुरंत विश्वास और सत्यता प्रक्ट हुई

जिसने भी दीपक प्रज्वलित किया

उन्होंने ने पा लिया विश्वास और सत्य का प्रकाश

हमारी अलौकिक संस्कृति हमें कितना उत्तम घड रही है🌹🙏🌹

मोमबत्ती प्रज्वलित ही करते है - मोमबत्ती बूझाया - अंधकार में डूब गया🌹🙏🌹

दीप से दीप ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दीप दीप की ग्यारहवीं

मंगला दर्शन से सोहाय

नैनों से ह्रदयस्थ मंगल प्रभु

मन तरंग तरंग हरखाय

मयूर पिंछ पाग बांधा

भाल तिलक चंदन पुष्ट

मयूर कृत कुंडल सजाया

नील रंग वर्ण वस्त्र धरण

हंस रंग वर्ण पायजामा

व्रजरज व्यजयंति माल

पग पैजनियां रुमझुमा

हडपच हीरलो चमक दमक

हे प्रभु! तेरी मंगल झांकी

मोरे अंग अंग समाई

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

प्रेम की समझ

प्रेम की पहचान

प्रेम की पराकाष्ठा

प्रेम की एकात्मता

कितना अदभुत चरित्र है श्री कृष्ण का🙏

राधा को विरहताप श्रीकृष्ण का अलौकिक आध्यात्मिक प्रेम है

यह क्षण भी प्रेम लीला अविरत है🌷

कहींओ ने प्रेम श्री कृष्ण से किया है और करते ही है करते ही रहेंगे

राधा - कृष्ण प्रेम संपूर्ण लीलात्मक है

कहीं द्रष्टांत निहारे

कहीं अनुभव पाये

राधा - कृष्ण प्रेमानुभूति के लिए हमें तय करना है हम कौन?

मीरा भक्त है

सूरदास भक्त है

द्रौपदी सखी है

सखी - सखा - भक्त हो सकते है

पर

प्रेमोस्पद नही वह केवल " राधा " है

वह केवल " कृष्ण " है

वासना - उपासना - साधना - आराधना

यह पथ और दिशा की कडी हो सकती है

पर

कक्षा नही

जो निरपेक्ष है वहां ही संसार - जगत नष्ट हो जाते है

जो निरपेक्ष है वहीं प्रेम का प्राथमिक चरण है 🌷🙏🌷

हे राधा! 🌷🙏🌷

हे कृष्ण! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

जिन्दगी जानने के लिए सदा उत्सुक हूं

जिन्दगी जीने के लिए सदा भावुक हूं

जिन्दगी जगाने के लिए सदा जागृत हूं

जिन्दगी निभाने के लिए सदा कार्यस्थ हूं

जिन्दगी सुख के लिए सदा प्रयत्नशील हूं

जिन्दगी आनंद के लिए सदा पुरुषार्थी हूं

हे जिन्दगी! समय समय आधारित तु निराली है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चलो मन गोवर्धन के शिला

चलो मन गोवर्धन के शिला

मुखारविंद दरश गौरस अभिषेक

मुखारविंद दरश गौरस अभिषेक

दंडवती परिक्रमा परिवेश

चलो मन गोवर्धन के शिला

चलो मन गोवर्धन के शिला

पग पग रज स्पर्श पुष्टि भक्तिरस

पग पग रज स्पर्श पुष्टि भक्तिरस

कुंड कुंड गिरिराज निकुंज

चलो मन गोवर्धन के शिला

चलो मन गोवर्धन के शिला

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितना अलौकिक है " पुष्टिमार्ग " निधि और " पुष्टिमार्ग प्रेम "

जगत में " प्रेम का सही स्पर्श " पाना हो

सृष्टि में " प्रेम का सही सिद्धांत " समझना हो

प्रकृति में " प्रेम का सही अनुभव " करना हो

तो " पुष्टिमार्ग " अनोखा रस माधुर्य पान है

प्रेम - कैसे - किससे - क्यूं और एकात्मता?

प्रेम कैसे?

निरपेक्ष - समर्पण - त्याग - विरह और स्मरण 🌷🙏🌷

प्रेम किससे?

अभेद - पूर्ण - अखंड - उपासक और अचल🌷🙏🌷

प्रेम क्यूं?

स्व पहचान - स्व धर्म - स्व साक्षर - स्व स्पर्श और स्व स्वरूप🌷🙏🌷

प्रेम एकात्मता?

प्रेम एक - प्रेम विश्वास - प्रेम पवित्र - प्रेम निश्चित और प्रेम आत्मा 🌷🙏🌷

श्री कृष्ण के चरित्र को अपनाले

श्री यमुनाजी के विश्वास को स्वीकारले

श्री वल्लभाचार्यजी के सिद्धांत साक्षरले

श्री अष्टसखा के ज्ञानभाव को चरित्रार्थे

अदभुत!🌷 अलौकिक🌷 अद्वैत🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दीपावली "

दीप से दीप प्रज्वलते रहो

अपना अंधकार दूर करते रहो

सुख की अपेक्षा मन की तितिक्षा

जीवन की कक्षा संस्कार उपेक्षा

निरपेक्षा से जीवन घडते रहो

अपना अंधकार दूर करते रहो

दीप से दीप प्रज्वलते रहो

अपना अंधकार दूर करते रहो

तुजसे आशा हे परमात्मा

तुझसे ही धन्य धन्य नाता हमारा

हे प्रभु! तु सदा हमसे हसते रहो

पद पद मेरा तुझसे रिश्ता जुडे

दीप से दीप प्रज्वलते रहो

अपना अंधकार दूर करते रहो

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दीपावली की शुभकामनाएं 🌷🙏🌷

" दीपावली "

हे मित्रों! दीप प्रज्वलित का अभिनंदन🙏

नूतन वर्ष का नूतन संकल्प के लिए एक संकेत 🌷🙏🌷

जो भी जीया - जो भी पाया

सब भौतिक है - पदार्थ है 🙏

अब मुझे जीना है - आध्यात्मिक हो कर, आत्मीय हो कर। चाहे मेरा जन्म कलयुग में हुआ है।

कलयुग में जन्म

कलयुग में जीना

कलयुग में ही जगाना आत्मीयता

यही ही है हमारी पहचान 🙏🌷🙏

आओ हम हमारा नया जन्म जीवन प्रारंभ करें हमारे नूतन संकल्प - नूतन तनु - नूतन पुरुषार्थ 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दिल में उमंग

नैनों में तरंग

प्रेम मिलन का रंग

नूतन वर्ष का संग

हर एक के मुख यही कहे

" नूतन वर्ष अभिनंदन "

" शुभ दीपावली "

अदभुत! अलौकिक! है हमारी यह दीपावली

अदभुत! अलौकिक! हे हमारी यह संस्कृति

जो घट घट आनंद

जो रज रज उजास

दीप से दीप प्रकटाये

आत्म से आत्म जगाये

दोषों का नाश

दुराचारों का नाश

दुश्मनों का नाश

दुष्टों का संहार

दुष्कर्मों का संहार

दुषण का संहार

सदा विजयी

स्वभाव विजयी

कर्म विजयी

धर्म विजयी

हे प्रभु! सदा मंगल दीप प्रज्वलना

नूतन हर संकल्प निभाना

नूतन तनु नवत्व प्रसराना

नूतन तन मन धन जीवनना

नूतन सकल सिद्धि जगाना

हर ज्योतिर्गमय आत्मा को " नूतन वर्ष अभिनंदन " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दीप प्रज्वलन सदा स्मरण में धरना

जो पल दीप प्रक्टाया वही क्षण संकल्प जगाया

दीप से दीप की आवली अर्थात माल्या रच कर

घर घर दीप प्रज्वलन करवायेंगे हर अंधकार मिटायें

तेरे दीप से तु ही रोशन तेरे दीप से तु ही रोशन

घट घट का पाप मिटायें घट घट जीवन संवारे

हे दीपक! तु हमें पवित्र रखना तु हमें जागृत करना

यही है प्रार्थना हे मेरे आत्म दीपक!

अखंड मेरे आँचल में प्रज्वलना 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दीपावली "

" नूतन वर्ष "

" भाईदूज "

आज के जगत के हम जीव!

हमनें कहीं प्रकार के नये संकल्प लिए है यह हमारी संस्कृति के धरोहर नये वर्ष उत्सव में🌷🙏🌷

यह करेंगे - ऐसा करेंगे

यही में उत्कृष्ट होने - हमें योग्य सिंचन मित्रों, श्रेष्ठ कुटुंबिजनों और धर्म संप्रदाय प्रवृत्ति के संस्कारयुक्त व्यक्तिओं से ही पायेंगे और निभायेंगे🌷🙏🌷

हमें अपना मनोबल स्थिर करने के लिए अपने आपको अपनी मानसिकता और शारिरीकता और आध्यात्मिकता से मजबूत होना है जो योग्यता भरा चयन करके श्रेष्ठ मित्रों, सामाजिक मार्गदर्शकों और न्यायीक व्यक्तियों से जुडना है🌷🙏🌷

हमें हमारा स्वार्थ छोडना है

हमें अपेक्षिता त्यागनी है

हमें स्वछंदता भूलनी है

हमें अविवेक व्यवहार सुधारना है

हमें स्व सन्मान अस्वीकार्य है

हमें छल कपट को तोडना है

हमें द्रष्टि में पवित्रता जगानी है

हमें आडंबर को मारना है

हमें अंधश्रद्...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"बांसुरी "

हमे जब भी यह याद आती है

हमारे नैनों में केवल श्री कृष्ण की कृति सामने खडी हो जाती है - जो कोई अधर पर धरी है - कोई हस्त में पकडी है - कोई कमरपट्ट से बांधि है - कोई प्रियतमा के राधा के हस्त है .... न जाने क्या!🌷🙏🌷

श्री कृष्ण ने बांसुरी को साथ साथ और हाथ ही रखा?

हम अवश्य समझते है श्री कृष्ण परब्रह्म परमात्मा है और वह साथ और हाथ रखे तो महात्म्य होगा ही - संकेत होगा ही - संदेश होगा ही - पुरुषार्थ होगा ही 🌷🙏🌷

हे बंसीधर!

हे मुरलीधर!

हे वेणुगोपाल!

कहींओ ने कहीं कल्पना करी है

कहींओ ने कहीं वैचारिकता करी है

कहींओ ने कहीं अनुभूति करी है

कहींओ ने कहीं स्पर्श पाया है

हे मधुपति!

हे मधुरापति!

हे मधुसुदन!

हे मधुर लय!

हे मधुर स्वर!

हे मधुर गूंज!

हे मधुर नाद!

हे मधुर मिलन!

हे ख्याल रव!

हे याद लहर!

हे विरह वेण!

नही कल्पना भी हो सकती

नही ख्याल भी हो ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह सेथी

यह बिंदी

यह काजल

यह नथनी

यह अधरी

यह झुमके

यह अंगूठी

यह मंगलसूत्र

यह कंगन

यह कमरपट

यह पायल

यह आँचल

क्या समझते है?

संवरें है सांवरे

तेरी प्रीत शृंगारे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सोचते तो हर कोई
यह समझ से वह समझ से
यही समझ से ऐसी समझ से
पर न स्व ने स्वीकारा न स्व ने अपनाया
कैसे
मन खुद का नैन ओरों का
सोच स्व की स्वीकार अनेकों का
संकल्प स्व का करना दूसरे की द्रष्टि से
ऐसा क्यूँ?
१. हमने दीवाली ज्यादा देखी है
२. हमने बाल ऐसे सफेद नहीं किये है
३. हमने सारी दुनिया घुमी है
४. रिश्ते में जमाना हमें बाप कहता है
५. हम झुकाने वाले है
६. बिना पढे हम शास्त्री है
ओहह!
ऐसों से जीना ऐसों के साथ रहना
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
समझ गया🌷🙏🌷
बिलकुल समझ गया🌷🙏🌷
नही कुछ कह सकता हूं
नही कुछ पूछ सकता हूं
मुझे माफ करना🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" एकादशी "

अदभुत महात्म्य जोडा है हमारे तन, मन, धन, जीवन और जन्म जन्म की गतिको हमारे ऋषिमुनियों ने यह तिथि से।

ग्यारहवीं ही तिथि अर्थात जो भी काल की स्थिति होगी यही तिथि को वह संपूर्णता से योग्यता सभर ही है - जो यह तिथि से जितने जुडे उतने ही हमारा तन, मन, धन, जीवन योग्य हो सकता है, श्रेष्ठ हो सकता है, उत्तम हो सकता है।

क्या क्या विज्ञान - क्या क्या गणित और क्या क्या माध्यम लगाया होगा की यही तिथि हर मास की श्रेष्ठ है - योग्य है - उत्तम है।

शास्त्रोक्त अनुसार - धर्म अनुसार - जीवन जीते जीते अनुभव अनुसार हम भी यह स्पर्श पाते है - हाँ! कुछ तो महात्म्य है यह तिथि का🙏

हम थोडा पृथ्थकरण करलें

मास में दो एकादशी

द्वादशी से लेकर दशम तक हम जो कुछ भी करले - एकादशी को यही अध्ययन करना हमने गये दिनों क्या क्या योग्यता पूर्वक कार्य किया, संकल्प किया जिससे जीवन की यो...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वाह - चाह और आह में चलता यह युग हमें कहां ले जायेगा?

" कर्माणिवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोङस्त्वकर्मणि ।।

🌷🙏🌷

हे दुनिया! तु कहां जा रही है?

श्वास पर श्वास नही

विश्वास पर विश्वास नही

🌷🙏🌷

जो मैं करुँ वही सही

जो ओर करे वही नही

ऐसे से ऐसा वैसे से वैसा

यही चक्कर में हर कोई कहें

तु नही तो ओर सही ओर नही तो नही कोई सही

चलती है दुनिया यूंही चलने दो

तु करते जा स्व समझ से सही

यही ही सही यही ही सही🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" प्रेम "

हे कृष्णा! हे कृष्णा!

तुम छूप कैसे सकते हो?

तुम अंतर्ध्यान कैसे हो सकते हो?

तुम हमसे दूर कैसे हो सकते हो?

एक सूक्ष्म सी या एक मूंदती पलक या एक उच्छ्वास की सुवास हमें तुम्हारा आंतरिक चेष्ठा या प्रेम की विद्यता या तुम्हारे मन की परिभाषा आज्ञित कर देती है तो तुम हमसे बिछड कैसे सकते हो?

मेरे नैन जहां तक पहुंचते है, मेरे कर्ण जहां तक का सुनते है, मेरा मन जहां तक पहुंच सकता है वहां तक की तुम्हारी मर्यादा है मुझसे दूर रहना - बाकी यह धडकन में, यह नैनन में, यह अधर पर, यह श्वास में, यह विरह में जो तुम बसे हो वहां से तुम कहीं जा ही नही सकते हो मेरी अवज्ञा से🌷🙏🌷

मेरी नजर जब पौधों पर जाती है - हर पत्ते श्याम निहालती हूं

मेरी नजर जब फूलों पर छाती है - मुझे अचूक स्पंदन होते है तुम यही फूलों को अपनी नजर से छू कर आगे बढे हो - क्यूंकि वह कलि से रंगबिरंगी फूलों में ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं नाचत नाचत पुकार पुकार राधा गुन गाऊं

नैनमें कान्हा नजर में कन्हैया

अधर पर गोविंद गोविंद गाऊं

मैं नाचत नाचत पुकार पुकार राधा गुन गाऊं

हस्तमें माला पहनाऊं खेवैया

प्रेम से वारी वारी गोपाल पुकारुं

मैं नाचत नाचत पुकार पुकार राधा गुन गाऊं

राधा कृष्ण राधा कृष्ण एक नाम

कृष्ण कृष्ण राधा आये राधा राधा कृष्ण आये

मैं नाचत नाचत पुकार पुकार राधा गुन गाऊं

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" प्रायश्चित "

प्रायः + श्चित

प्राय: - प्रा + य: = प्र + अ = प्रा + य: प्राय:

प्राय - प्रकट होना - प्राकट्य होना - प्रकटाना

क्या प्रकट होना - प्राकट्य होना और प्रकटाना?

ज्ञान प्रकट होना - प्राकट्य होना और प्रकटाना - प्रकट करना 🙏

ज्ञान की प्रकटना केवल प्रकाश से ही उद्दिप्त होता है - जहां उद्दिपन वहां अवश्य जागृत होना - अज्ञान का नाश करना - अंधकार को नष्ट करना 🙏

कैसे होगा प्रकाश का उद्दिपन?

कैसे होगा अज्ञान का नाश?

कैसे होगा अंधकार का नष्टप्राय?

श्चित = श् + चित

श् - श्रेष्ठ - योग्य - सूचित - सुनिश्चित

चित = चैताना - जगाना - प्रकटाना

जिसने स्व स्वाध्याय स्व धन से स्वयं को उद्दिप्त किया

जिसने स्व चित्त को स्व साधना से चैताया

उन्होंने परमोच्चित परम ज्ञान से संकल्प - परम ध्यान से कर्म किया - वह सदा स्व स्वयं को प्रकटाया - जगाया

वह अपने जन्म से धरी कोई भी...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वल्लभ वल्लभ सदा शरण

वल्लभ वल्लभ सदा चरण

वल्लभ वल्लभ सदा स्मरण

वल्लभ वल्लभ सदा हरण

वल्लभ वल्लभ सदा करण

वल्लभ वल्लभ सदा तरण

वल्लभ वल्लभ सदा धरण

वल्लभ वल्लभ सदा वरण

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह कैसी विडंबना है श्रीकृष्ण!

तुम जो जो युग में हो पर मेरा युग में केवल नाम से हो

कृष्ण कृष्ण कृष्ण से ही तुम हमारे

न तेरे शरण पा सके

न तेरे चरण छू सके

केवल स्मरण स्मरण

कृष्ण कृष्ण कृष्ण भजन कर सके

न तेरी लीला पा सके

न तेरा रंग पा सके

न तेरा संग पा सके

कृष्ण कृष्ण कृष्ण आहवान कर सके

कृष्ण तु छूपा है?

तु तो हर हर में है

कृष्ण तु दूर है?

तु तो रज रज में है

कृष्ण तु कोई धाम है?

तेरा तो भक्त ह्रदय तो धाम है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण तु क्या है?

कृतज्ञ से कृष्ण है

प्रेम से कृष्ण है

विश्वास से कृष्ण है

तो हम विशुद्ध हो - पवित्र हो - निरपेक्ष हो

ओहहह! अवश्य अवश्य अवश्य🌷🙏🌷

यही तो परिवेश में जीने की कोशिश कर रहे है🌷🙏🌷

आजा आजा ऑ सांवरिया 🌷🌺🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सोचते है

कुछ करते है

संकल्प करते है

आयोजन करते है

व्यवस्था करते है

तपास करते है

अर्थसूचक माहिती इकठ्ठी करते है

विविध पहलूँ निहालते है

अनुभवों से जोडते है

इतिहास का पृथ्थकरण करते है

सिद्धांत को समझते है

नियमों से सूत्रता करते है

सलाहसूचन आवश्यकते है

मार्ग तय करते है

फल की गुणात्मकता समझते है

आखिर

निर्णय करते है - यह करेंगे - ऐसा करेंगे

सोचलें अवश्य तय करलें

हम हर क्रिया ऐसे ही पृथ्थकरण से हैं करते है?

अगर -" हाँ " ही है तो अवश्य हम सही ही पायेंगे

न नसीब कुछ कर सकता है

न कोई मान्यता मान सकते है

न कोई साथ से ही सिद्ध हो सकता है

न कोई कुछ बिगाड़ सकता है

न कोई तंत्र मंत्र असर कर सकता है

न कोई कृपा या दया छा सकती है या पा सकते है

केवल और केवल अपने योग्य सैद्धांतिक निती से ही यह पुरुषार्थ क्रिया सिद्ध होती ही है🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम कलयुग के मानव

अति गंभीरता से सोचना

हम कलयुग के अंश है

सूक्ष्म से सूक्ष्म गहराई से समझना

हम कलयुग के स्वरुप है

अणु से नेनों अणु से स्पर्शे

हम कलयुग के अणु है

सत्य

हाँ! अवश्य सत्य

क्यूंकि

न सत्य है - सतयुग नही

न यज्ञ - धर्म है - त्रेतायुग नही

न दान - ज्ञान है - द्वापरयुग नही

न सत्य - धर्म - काम - मोक्ष

तो कलयुग है

ओहह! 🌷🙏🌷 अवश्य हम कलयुगी ही है

कलयुग मिटाने हमें सत्य - धर्म - ज्ञान तो अपनाना ही पडेगा, न अपनाये तो कलयुग में डूबे 🌷🙏🌷

है हम में इनमें से कुछ भी - नही🌷🙏🌷

सोचले! हम क्या है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नजर उठे तो बिंदिया दिठे

नजर झुके तो पायल छूये

नजर मिले तो प्रीत जागे

नजर तिरछे तो लाज आये

नजर बंधे तो संबंध बंधाये

नजर मूडे तो मान उठे

हे राधा! तु निराली है 🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सत्य का पाना
सत्य का ज्ञान
सत्य का परिवेश
सत्य का परिताप
सत्य का आध्यात्म
सत्य का पुरुषार्थ
सत्य का तप
सत्य का संकल्प
सत्य का ध्यान
सत्य का डग
सत्य का रंग
सत्य का सिद्धांत
सत्य का श्रम
सत्य का परिश्रम
सत्य का शिष्ट
सत्य का कर्म
सत्य का धर्म
सत्य का शरण
सत्य का अनुभव
जन्मोजन्म से चलती यह यात्रा को हम विश्राम
जन्मोजन्म से चलती यह यात्रा का समापन
जन्मोजन्म से चलती यह यात्रा का विश्लेषण
जन्मोजन्म से चलती यह यात्रा का परिवर्तन
यह मनुष्य जन्म से ही सत्य की गति का परिणाम हम ज्ञात कर सकते है
कितना अदभुत - अनोखा - निर्णयी यह जन्म है 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शास्त्रों के पन्ने और इतिहास के पन्ने घुमाये

जो जो चरित्र निहाले जो जो जीवन टटोले

कहीं ने ऐसी उम्र गुजारी कहीं ने कहीं निर्देशी

गुजारी हुई को जो अपनाया

सामान्यतः सामान्यतः स्व गुजारा

निर्देशी हुई को जो स्वीकारा

उत्तमत: उत्तमत: स्व पाया

यही कवायत हर जीवन की

पैसा से जीया वह पैसा से घवाया

धर्म से जीया वह धर्म से विधाया

यही है कर्म की पहचान

यही है स्व का सुसर्जन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर दूर तक नैन फैलाये
जो जो नजर आया वह समाया

दूर दूर तक आवाज फैलाई
जो जो सुना उन्हें जगाया

दूर दूर तक कदम उठाये
जो जो साथ चले उन्हें निभाया

अब दूर दूर मैं चला
जो समाया को ले चला
जो जगाया को ले चला
जो निभाया को ले चला

यही कृष्ण है
यही कृष्ण था
यही कृष्ण होगा

अकेला बिलकुल अकेला सिर्फ़ अकेला
एक प्रियतम के साथ
एक सखी के साथ
एक भक्त के साथ
एक सखा के साथ
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कुंज बिहारी वृंदावन विहारी

बांके बिहारी गोवर्धन धारी की जय हो

हे राधा प्यारी व्रज रस रानी

वृषभानु दुलारी प्रेम बरसानी की जय हो

हे नंद दुलारो यशोदा को कान्हो

देवकी न्यारो वसुदेव सहारो की जय हो

हे यमुना सांवरो श्यामा श्यामलीयो

कालिन्दी कालियो सूर्यसूता चतुर्थो

हे वल्लभ नायक महाप्रभु ध्यायक

वाक्पति सुबोधायक वैश्वानर पुष्टक

हे गोवर्धन गोपाल गिरिराज गौचारक

श्रीनाथजी गोत्रे गोप गोपि व्रजरक्षक

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे नाथ नारायण वासुदेव 🌷🙏🌷

हे नाथ नारायण वासुदेव 🌷🙏🌷

हर शब्द का अर्थ समझे तो यह मंत्र हो जाता है

हर शब्द का स्मरण करे तो यह प्रार्थना हो जाती है

हर शब्द का गूंजन करे तो यह पुकार हो जाती है

हर शब्द का यजन करे तो यह है आहुति हो जाती है

हर शब्द का आहवान करे तो अवतार हो जाता है

हर शब्द का ध्यान धरे तो तपश्चर्या हो जाती है

हर शब्द को स्वरबद्‍ध करे तो धून हो जाती है

हर शब्द को आत्मसात करे तो परमात्मा हो जाता है

हर शब्द को प्रेमोउर्जित करे तो प्रेमास्पद हो जाता है

हे अदभुत अलौकिक संस्कृति तुम्हें नमन है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भगवान "

यह आध्यात्म शब्द से हम कहीं अर्थो और मान्यता से वाकेफ है।
जन्म से लेकर यह क्षण तक हमनें अनगिनत बार सुना है - समझने की कोशिश की है - अनुभव करने की चेष्टा की है 🌷🙏🌷
हर क्षण हमारी जिज्ञासा वृत्ति रही है - इन्हें खोजने की - हर क्षण प्रतिक्षा करते है इन्हें पाने की - हर क्षण चेष्टा रही है इन्हें समझने की - हर क्षण प्रयत्नशील है इन्हें मिलने के🌷🙏🌷
युगो युगो से कहींने अधिकक्षम - अधि आध्यात्मिक ऐसा ऐसा कहा - खुद साक्षात्कार हुए - कहीं साक्षात्कार से जुडे - कहींने साक्षात्कार लुटाये🌷🙏🌷
बस - ऐसे ही शास्त्रोक्त और कर्मकांड से " भगवान " शब्द को जाना - भगवान के लिए कुछ करते गये, शायद कोई चमत्कार हो जाय🌷🙏🌷
बस यह चमत्कार वृत्ति हममें प्रस्थापित हो गई - हममें जाग गई - हममें घर कर गई - हममें मन कर गई - हममें बस गई🌷🙏🌷
बस यही से यह मान्यता का आरंभ, पारंभ और आद्रता - याचकता - पार्थना - विनंती - कर्मकांडता - सामाजिक संस्कारु रीतिरिवाजों की क्रियाओं शुरु🌷🙏🌷
जो हर काल - हर धारणा - हर क्षेत्र - हर माध्यम - हर लोकवायका - हर व्यवहार से - हर चेष्टाओं से मृत्युपर्यन्त करते रहते है🌷🙏🌷यही में हमारी कीर्ति, समृद्धि, मान सम्मान और साक्षात्कार।
यहां ही हमारा संस्कार - धर्म संप्रदाय - भगवद् कृपा - गुरु आज्ञा - पूर्वजों आशीर्वाद और " भगवान " की मान्यता सभर अनुमति और अनुभूति 🌷🙏🌷
यही ही " भगवान " को जानने - समझने - पहचानने और पाने की प्रणाली🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भगवान "

मातापिता - सामाजिक धार्मिक रीतिरिवाजों से हम भगवान को जानने की कोशिश करते रहे - करने लगे और हम संसार की असरों में घिसटते गये - कहीं अनुष्ठान किये - कहीं मनोरथ किये - कहीं उत्सव किये - कहीं प्रसंग में जुडे। मन में कोई चरित्र - कोई संप्रदाय - कोई संस्कार - कोई मान्यता प्रस्थापित करते गए। जो स्वीकारा जो अपनाया संप्रदाय के निती नियमन का पालन करते करते श्रीगुरु शरणागत से स्व को धर्म के बंधन में बांधते गये 🌷🙏🌷

स्वीकारा और अपनाया धर्म में स्व को धर्मिष्ठ, धर्मप्रेमी, धर्मप्रधान प्रस्थापित करने बार बार डुबकी लगाने लगे, और उनके पद चिह्न अपने तन मन धन में प्रस्तुत करने लगे। यही ही सर्वश्रेष्ठ सैद्धांतिक धर्म जगत का है जिससे मैं जीता हूं।

पढे, स्नातक हुए यही धर्म संप्रदाय में खूपते गए " भगवान " के कहीं अर्थो में लिपटते गए - जो समझे वह गुणगान गाते गये।

कभी आस्तिक तो कभी नास्तिक होते रहते

पर " भगवान " की सत्यता के अधुरप अंधश्रद्धा रंग में रंगाते गए। यही ऋढिचुस्तता ही हमें ध्येयहीन और भटका गई। जो सत्य पाने के लिए हम संस्कार युक्त धर्म ग्रहा - जो सत्य पाने के लिए हमने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की, वह सब अर्थोपार्जन की लालसा में सही राह छोड दिया - भटक गये और " भगवान " को पाने का संकल्प तोड मरोड दिये🌷🙏🌷

अंधकार और अंधविश्वास और अंधश्रद्धा के खप्पर में हम मोहित हो कर बस जीये जाते है। " भगवान " कौन तो शायद स्वयं - स्वयं और स्वयं। मैं मेरा मन भगवान।

जब कोई आंधी तूफान मुश्किल तकलीफ आयें तो भगवान की ओर मूडना - बाकी

स्वयं ही सबकुछ।

नही नही।

अवश्य हमें " भगवान " जानना है, समझना है, पहचानना है, पाना है🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

विरह ताप से प्रेम रंग सजाया

न अक्षर न स्वर से प्रेम तोला

जो जो ख्यालों में प्रेम रंग उभरा

केवल तुझ संग होली खेला

कान्हा तु पिचकारी तो मैं रंग

प्रेमी हाथ धरे मैं रंगाऊँ तेरे संग

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

तेरी निगाहें टिकी टिकी

तेरी निगाहें रुकी रुकी

तेरी निगाहें ठहरी ठहरी

तेरी निगाहें मिलती मिलती

तेरी निगाहें कहती कहती

तेरी निगाहें पुकारती पुकारती

तेरे निगाहें गूँजती गूँजती

साथ हूं सब कुछ छोड कर

खडा हूं हर कुछ भूल कर

जुडा हूं सर्वस्व त्याग कर

यह केवल प्रेम है प्रेम ही है

जो केवल तुझे खबर मुझे खबर

जो केवल है तेरी नजर मेरी नजर

हे राधा! तु नही दूर मुझसे

हे राधा! तु नही क्षर मुझसे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भगवान पुकारे और जीव दौडे "
आपने कहीं सुना है? आपने कहीं जाना है?
प्रार्थना हम करते है - याचना हम करते है
विनंती हम करते है -
हे प्रभु! कृपा करो - दया करो - रक्षा करो
मदद करो - वरदान दो
अर्थात - हम ही उन्हें बार बार पुकारते है
कभी सोचो
" भगवान हमें पुकारे "
सेवा करे - हम पुकारे
मनोरथ करे - हम पुकारे
उत्सव करे - हम पुकारे
सत्संग करे - हम पुकारे
भजन करे - हम पुकारे
कथा करे - हम पुकारे
यज्ञ करे - हम पुकारे
कीर्तन करे - हम पुकारे
यात्रा करे - हम पुकारे
अर्थात - हम ही पुकारे - केवल हम ही पुकारे
" भगवान हमें क्यूँ पुकारे? "
" भगवान हमें कब पुकारे? "
" भगवान हमें कैसै पुकारे? "
सोचे अवश्य सोचे
" भगवान हमें पुकारे? "
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

मुझे पता ही था सब ऐसा ही सोचेंगे
" भगवान कैसे पुकारे हमें? "
हम कहीं बार बोलते है
भगवान ने बुलाया तो हम यात्रा कर सके
भगवान ने बुलाया तो हम उनके धाम पहुंच सके
भगवान ने करवाया तब हम यह सब कर सके
अर्थात - हम सब जानते है - समझते है की " भगवान ही पुकारते है - बुलाते है - करवाते है " तो यह झंझाल क्यूं?
हम पामर जीव है
हम अबुध है
हम अज्ञानी है
हम मूढ है
नही नही
हम शायद पढे नही - हम पढे हुए है
हम कुछ न कुछ अंश तक स्नातक है अपने कार्यभार में - जीवन में 🌷🙏🌷
हम घडी घडी प्रभु स्मरण - सत्संग - पाठ - कथा और ज्ञान बांटते रहते है
तो भी हम पामर! अबुध! अज्ञानी! मूढ!
नही नही
सोचे - हमें भगवान क्यूं पुकारे?
हमें भगवान क्यूं बुलाये?
हमें भगवान क्यूं करवाये?
बस ऐसे ही ठोकते रहना और अपनी मान्यताओं को पोषते रहना!
नही नही 🌷🙏🌷
अवश्य - जानो - समझो - स्वीकारो - परिवर्तो - अपनावो 🌷🙏🌷
यही ही हमारा मूलत्व कार्य है 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बूंद नैन से

एक बूंद होंठ से

एक बूंद कपोल से

एक बूंद हस्त से

और

एक बूंद दिल से

टपक जाय

नैन से टपका

किसीके हस्त में गीरे तो

आधार बन जाय

होंठ से टपका

किसीके गाल पर गीरे तो

हूंफ बन जाय

कपोल से टपका

किसीके मन में बस जाय तो

किस्मत बन जाय

हस्त से टपका

किसीके चरण को छू जाय तो

संस्कार हो जाय

दिल से टपका

किसीके दिल में खील जाय

प्रेम अमृत हो जाय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्रभु! काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया जो मैंने जन्म धरा तब न कुछ था - हाँ 🙏

माँ ने सिंचा

पिता ने थपथपाया

कुटुंब ने खेलाया

न मुझमें काम था

न मुझमें क्रोध था

न मुझमें लोभ था

न मुझमें मोह था

न मुझमें माया थी

किसने पिरोया - किसने पिरोयी?

गहराई से समझे 🙏

पूर्वानुजन्म कर्माणिनिधान - न सोचना

केवल यहीं से ही सोचना जबसे हमारे घर कोई बालक ने जन्म धरा और उनका तब तक बडा होना जबतक वह निर्णय ले सकने का काबिल हो गया 🌷🙏🌷

अवश्य सोचना - चिंतन करना - अध्ययन करना🙏

एकांत और एकाग्रता से

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जहां तक हमारा ज्ञान पहुंचे

जहां तक हमारा भाव पहुंचे

सदा मूल पंच तत्वों को माध्यम बना कर ही पहुंचते है 🌷🙏🌷

यह पंच तत्वों का संयोजन स्त्री और पुरुष के अनुसंधान से ही हम योगत्व कर सकते है।

शायद हम सोचे

* हमें दिर्घायु होना है

* हमें ऐश्वर्य पाना है

* हमें सुख पाना है

* हमें सलामती पानी है

* हमें शांति पानी है

* हमें प्रेम पाना है

* हमें आनंद पाना है

* हमें निरोगी होना है

तो हमें अवश्य स्त्री और पुरुष को आध्यात्म से निहालना होगा🌷🙏🌷

ब्रह्मांडों का जिस तरह से निर्माण हुआ है इनमें यह स्त्री तत्व और पुरुष तत्व को समझना अति आवश्यक है 🌷🙏🌷

स्त्री न अकेली सबकुछ पा सकती है

पुरुष न अकेला सबकुछ पा सकता है

हमारे कोई भी शास्त्र टटोल ले

यही सिद्धांत पायेंगे

स्त्री और पुरुष के संयोजन से ही सर्वत्र पा सकते है🌷🙏🌷

सन्यास लेने से अवश्य ज्ञान पा सकते है

पर

शांति - ऐश्वर्य - प्रेम - आनंद और पूर्णता तो केवल स्त्री और पुरुष के आध्यात्म संयोजन से ही पा सकते है - जैसे

राधाकृष्ण

सीताराम

उमाशंकर

जो कण कण में बसे है

जो रज रज में बसे है

जो बूंद बूंद में बसे है

जो रंग रंग में बसे है

जो सूत्र सूत्र में बसे है

जो अक्षर अक्षर में बसे है

जो स्वर स्वर में बसे है

जो स्पंदन स्पंदन में बसे है

जो जहां बसे वहां परिवर्तन अवश्य है - यह परिवर्तन आध्यात्म से हुआ🌷🙏🌷

समझना श्रेष्ठता पायी - उत्तमता पायी🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वैज्यंति धारी

हे गिरिराज धारी

हे वृंदा हारी

हे भक्ति हारी

हे प्रेम समर्पि

हे मधुर उर्जि

हे रंग दानी

हे संग त्यागी

हे विरह रागी

हे अश्रु दुलारी

हे कष्ट बुहारी

हे शृंगार सुहायी

हे नैन तिरछाई

हे आत्म मिलाई

हे अंग स्पर्शाई

हे प्रीत बंधाई

हे कृपा बरसाई

हे धर्म दर्शाई

हे कर्म सिद्धाई

हे मेरे प्रभु!तुम काहो काहो नाही

हे मेरे प्रिये! तु सदा जीवन सच्चाई

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti ".

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गृहसेवा में दीपक नही प्रजवलित कर सकते है और आरती नही कर सकते है?

पर

हवेली में दीपक प्रजवलित करते है और आरती भी करते है।

ऐसा विरोधाभास क्यूँ?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अपने आप को अनेकों में पाया

अपने आप को अनेकों में ढूंढा

अपने आप को अनेकों में खोया

अपने आप को अनेकों में समाया

अपने आप को अनेकों में सिंचा

अपने आप को अनेकों में जगाया

अपने आप को अनेकों में बसाया

अपने आप को अनेकों में रचाया

अपने आप को अनेकों में मिटाया

अपने आप को अनेकों में मिलाया

अपने आप को अनेकों में रंगाया

अपने आप को अनेकों में डूबोया

अपने आप को अनेकों में भिगोया

अपने आप को अनेकों में हराया

अपने आप को अनेकों में निभाया

अपने आप को अनेकों में रिझाया

अपने आप को अनेकों में भूलाया

अपने आप को अनेकों में याचा

सच हे प्रभु! तुझे हर हर पाया🌷🙏🌷

मुझे हर कोई क्षमा करना अगर कोई मुझसे सूक्ष्मसा आपके लिए अपराध हो -

मैंने हर हर में श्री प्रभु पाया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बार बार सुनते आये है

आज्ञा - आज्ञा " गुरु आज्ञा "

कुछ करना है - गुरु आज्ञा

कुछ संभलना है - गुरु आज्ञा

कुछ समझना है - गुरु आज्ञा

कुछ स्वीकारना है - गुरु आज्ञा

कुछ संकल्प करना है - गुरु आज्ञा

कुछ निपटाना है - गुरु आज्ञा

कुछ संवारना है - गुरु आज्ञा

कुछ सुधारना है - गुरु आज्ञा

कुछ पाना है - गुरु आज्ञा

कुछ संवेदना है - गुरु आज्ञा

कुछ जोडना है - गुरु आज्ञा

कुछ वेदना है - गुरु आज्ञा

कुछ टटोलना है - गुरु आज्ञा

कुछ सिद्ध करना है - गुरु आज्ञा

कुछ जताना है - गुरु आज्ञा

कुछ कहना है - गुरु आज्ञा

कुछ बढना है - गुरु आज्ञा

कुछ बांधना है - गुरु आज्ञा

कुछ छोडना है - गुरु आज्ञा

गुरु आज्ञा के बिना कुछ नहीं 🌷🙏🌷

अवश्य 🌷🙏🌷

कितना विश्वास - कितनी श्रद्धा - कितना दासत्व - कितना समर्पण - कितने आज्ञाकिंत - कितने विवेकी🌷🙏🌷

कभी सोचा है - यह आज्ञा क्या है?

कभी सोचा है - यह आज्ञा का रहस्य?

कभी सोचा है - यह आज्ञा का सत्य?

मातापिता की आज्ञा

वडिलों की आज्ञा

गुरु की आज्ञा

संतों की आज्ञा

धर्म की आज्ञा

आज्ञा - समझना - स्वीकारना - अपनाना

सामान्यतः से न समझो - स्वीकारो - अपनावो

आज्ञा वही दे सकता है जो समझता हो - स्वीकारता हो - अपनाता हो और सिद्‌ध कर सकता हो🌷🙏🌷

आज्ञा का सामर्थ्य - सार्थकता अखंड है - सौभाग्यी है - विशुद्‌ध है - पवित्र है

निरपेक्ष है - नि:हंकारी है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हरिदास त्योहारी राधा ह्रदय दुलारी

बांके बिहारी तोरी लाल लाडली प्यारी

निकुंज गोरी वल्लभ न्यारी गोप किशोरी

व्रज विहारी भक्त प्रेमहारी श्यामा जुहारी

यमुना मुरारी कुब्जा सिधारी गोवर्धन गिरधारी

मुरली धारी गोपाल गौचारी मोहन वारी

राधा तोरी राधा मोरी राधा हमारी

मेरी मेरी राधा तेरी तेरी राधा हमारी राधा

राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक नजर से है न्यारी राधा रानी हमारी

एक मन से है मुरारी राधा रानी हमारी

एक तन से है तोहारी राधा रानी हमारी

एक प्राण से है प्यारी राधा रानी हमारी

एक आत्म से है आराध्यी राधा रानी हमारी

एक धडकन से है धूरी राधा रानी हमारी

एक सांस से है समाई राधा रानी हमारी

एक रंग से है रंगाई राधा रानी हमारी

एक आँचल से है ओढाई राधा रानी हमारी

एक शृंगार से है सजाई राधा रानी हमारी

एक प्रीत से है पूरवाई राधा रानी हमारी

एक विरह से है विंधाई राधा रानी हमारी

एक प्रेम से है पीलाई राधा रानी हमारी

एक श्याम से है श्यामाई राधा रानी हमारी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार! कितना मधुर 🌷

अलौकिक - अदभुत - अखंड

न्यारा - दुलारा - विरहा - एकात्मता

सच! केवल केवल केवल पवित्र

पता नही - हम यह पवित्रता क्यूं नही पा सकते है?

जन्म जन्म जीवन जीवन फिर भी नही पा सकते है 🌷🙏🌷

कितने संकल्प करें

कितने निश्चय करें

कितने प्रण करें

कितने वचन करें

क्यूं?

हम संसारी

हम इन्सान

हम मानव

हम जीव

हम जगती

हम अंश

नही नही 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री यमुना मेरे साथ बहे
श्री गोवर्धन मेरे साथ चले
श्री अष्टसखा मेरे साथ गाये
श्री विठ्ठल मेरे साथ सेव्ये
श्री वल्लभ मेरे साथ बैठे
श्री पुष्टिमार्ग मेरे साथ साक्षरे
श्री लीला सखा मेरे साथ खेले
श्री लीला सखी मेरे साथ रमे
श्री भक्तवत्सल मेरे साथ समर्पे
श्री स्वामीनीजी मेरे साथ सेवे
श्री गोविंद मेरे साथ जागे
ओहहह! यमुना 🌷🙏🌷
ओहहह! गोवर्धन🌷🙏🌷
ओहहह! विठ्ठल 🌷🙏🌷
ओहहह! वल्लभ🌷🙏🌷
ओहहह! स्वामीनीजी🌷🙏🌷
ओहहह! गोविंद🌷🙏🌷
हे प्रभु! मैं तुम्हारी शरण 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

श्याम तेरी एक नजर मेरी नजर से मिलाना है

चाहे तुम तिरछी नजर से मेरी ओर निहालो

चाहे तुम मूंदी नजर से मेरी ओर निहालो

मुझे मेरी नजर तुम्हारी नजर से मिलाना है

श्याम तेरी एक नजर मेरी नजर से मिलाना है

चाहे तुम सीधी नजर से मेरी ओर निहालो

चाहे तुम झुकी नजर से मेरी ओर निहालो

मुझे मेरी नजर तुम्हारी नजर से एक करना है

श्याम तेरी एक नजर मेरी नजर से मिलाना है

चाहे तुम नैन बंध से मेरी ओर निहालो

चाहे तुम आंतर नैन से मेरी ओर निहालो

मुझे मेरे नैन तुम्हारे नैन से एक करना है

श्याम तेरी एक नजर मेरी नजर से मिलाना है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आपने कहीं श्री यमुना को देखी?

आपने कहीं श्री गोवर्धन को देखा?

आपने कहीं श्री वल्लभ को देखा?

आपने कहीं श्री विठ्ठल को देखा?

आपने कहीं श्री श्री नाथ को देखा?

हाँ! अवश्य देखा 🌷🙏🌷

वाह! आपको नमन🙏

वाह! आपको प्रणाम🙏

वाह! आपको वंदन🙏

मैंने श्री यमुना को देखा हर हर नैनों में👁

मैंने श्री गोवर्धन को देखा हर हर तन में🚶

मैंने श्री वल्लभ को देखा हर हर जीवन में🌞

मैंने श्री विठ्ठल को देखा हर हर मधुरता में 🌷

मैंने श्री श्री नाथ को देख हर हर आत्म में 🔥

यही निहालता रहूं - यही रस पीता रहूं - यही आनंद लुटाता रहूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी सांसों में बसे
तेरे नैनों में बसे
तेरी धडकनों में बसे
तेरी रुह में बसे
तेरे आँचल में बसे
तेरे प्रेम में बसे
तुम ही कहो
तेरी हर चाह में बसा
तेरी हर राह में बसा
तेरी हर आह में बसा
तेरी हर बाह में बसा
अब ठहर जा यह नैनमें
अब ठहर जा यह अधर पे
अब ठहर जा यह धडकन में
अब ठहर जा यह सांसों में
अब ठहर जा यह विरह में
अब ठहर जा यह प्रेम में
राधा!

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" हिन्दु " हम हिन्दु " हम हर हिन्दु " हमारा हिन्दुस्थान 🌷🙏🌷

आदि जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी का अखंड, अलौकिक, अदभुत पुरुषार्थ हमारी संस्कृति को उत्स , उद्दिप्त, उदभव, उजागर, उत्कृष्ट और उत्कर्ष करके सारे ब्रह्मांडों में हिन्दुत्व के संस्कार - धर्म प्रस्थापित किया है🌷🙏🌷

यही सांस्कृतिक धरोहर की जन्मभूमि " काशी " का नूतन परमश्रेष्ठ आर्विभाव हमारे प्रथम हिन्दुत्व सेवक माननीय श्री नरेन्द्रभाई मोदी के पवित्र और विश्वनीय संकल्प से नूतन निर्माण करके ब्रह्मांडों में " नूतन हिन्दु संस्कार काशी " हर तत्वों के लिए संस्थापित करेंगे🌷🙏🌷

हमारे लिए हिन्दु गौरव दिन है 🌷🙏🌷

हर एक को धन्यवाद 🌷🙏🌷👍

" जय जय हिन्दु साक्षरता "🌷🙏🌷

" जय जय हिन्दु आत्मीयता " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मन - मानव - मनुष्य

हम में क्या है?

हम मन से है

हम तन से है

हम धन से है

हम जीवन से है

ओहहह! तो हम में क्या है?

हम में सर्वथा सर्वज्ञ सर्वश्रेष्ठ सर्वोत्तम सर्वोच्च है - विराटता🙏

हम में ब्रह्म है

हम में ब्रह्मांड है

हम में परब्रह्म है

जन्म से ही इश्वरीय बल - भगवदीय बल है

हम ही ऐसे जीव है जो ब्रह्म की विराटता पा सकते है🙏

हम समझते है - हम पृथ्वी लोक पर है

हम समझते है - हमें परलोक सिधारना है

हम समझते है - हमें गोलोक धाम पहुंचना है

हम समझते है - हमें मधुलोक में जाना है

हम समझते है - हमें कहीं लोक में पहुंचना है

नही नही 🙏

हम मनुष्य - हमें निर्भयता पानी है

हम मनुष्य - हमें योग्यता पानी है

हम मनुष्य - हमें साक्षरता पानी है

धन दौलत - यश एश्वर्य - लाभ प्रतिष्ठा वान मनुष्य है🙏

सोचो! यही होना है तो - करना है

सोचो! यही विद्वता पानी है

तो अवश्य हम यही लोक से इति: लोक से हम हर लोक पा सकते है🙏🌷🙏

यही सामर्थ्यता है मनुष्य में🌷🙏🌷

न तो हमें दु:ख नही - न तो हमें कष्ट नही

हम सदा आनंद - परमानंद - प्रेमानंद में ही जो सकते है🙏🌷🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिमार्ग - ग्यारह

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "